International Journal of History 2020; 2(2): 149-155

INTERNATIONAL JOURNAL OF HISTORY

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2020; 2(2): 149-155
Received: 25-06-2020
Accepted: 30-07-2020

परितोष कड़ेला
सहायक आचार्य (इतिहास),
सेठ मुरलीधर मान संहका
राजकीय कन्या महा वद्यालय
भीलवाड़ा, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
परितोष कड़ेला
सहायक आचार्य (इतिहास),
सेठ मुरलीधर मान संहका
राजकीय कन्या महा वद्यालय
भीलवाड़ा, राजस्थान, भारत

पुरुषार्थ की वैचारिकता व औ चत्य

परितोष कड़ेला

सारांश

प्राचीन हिंदू वचारधारा या वस्तृत अर्थ में प्राचीन भारतीय संस्कृति में भौतिक व आध्यात्मिक दोनों वचारधाराओं का सम्मिश्रण,सामंजस्य और अपूर्व संबंध में देखने को मलता है| भारतीय संस्कृति का मानना है क शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लए मानव संसार में भौतिक जीवन में तथा संयम, नियम और आदर्श से परिपूर्ण आध्यात्मिक जीवन में कोई स्थाई वभाजन और वरोध नहीं है ले कन भोग सर्वस्य जीवन को ही पूर्ण अपना लेना उ चत नहीं है क्यों क यह सब सांसारिक ऐश्वर्य अस्थिर है यह धीरे-धीरे नष्ट हो जाएगा और इसके पश्चात इस जीवन को आध्यात्मिक उन्नति में लगाना आवश्यक है ता क परलोक में सुख मले अथवा आध्यात्मिक सुख की प्राप्ति हो | प्राचीन कालीन भारतीय वचारकों ने उपयुक्त दोनों वचारधारा में संबंध में स्था पत कर मनुष्य के जीवन को आध्यात्मिक भौतिक और नैतिक दृष्टि से उन्नत करने के नि मत्त पुरुषार्थ के नाम से अपने दार्शनिक वचारों की नियोजना और व्याख्या की | पुरुषार्थ चतुष्टय की अवधारणा के चार भाग हैं - यह है धर्म अर्थ काम और मोक्ष | पुरुषार्थ चतुष्टय धर्म अर्थ काम मोक्ष अपनी संतु लत अवस्था में आदर्श व्यक्तित्व या जीवन का प्रतीक है | श्रुति युग से पुरुषार्थ रूपी धारा आज तक अनंत रूप से प्रभाव मान है| इस आदर्श के अनुसार मानव जीवन केवल अ धकारों को ही नहीं बल्कि कर्तव्यों को भी सू चत करता है तथा त्यागमय कर्तव्यमय व अनुशा सत जीवन का प्रतिनि धत्व करता है | इन सब के महत्वपूर्ण समन्वय से जीवन की परम प्राप्ति सरल होती है| अनुशासन और कर्तव्य मानव जीवन का धर्म है उसका ही अर्थ और काम पक्ष तथा परम प्राप्ति को मोक्ष कहा गया है इस तरह मानव जीवन के सर्वांगीण व् संतु लत वकास के लए भारतीय मनी षयों ने जिस चंतना को अंगीकार कया उसे पुरुषार्थ चतुष्टय के नाम से जाना जाता है |:

कूटशब्द: पुरुषार्थ चतुष्टय, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, बोधायन धर्मसूत्र, भारतीय हिंदू दर्शन, मनुस्मृति, संस्कृत साहित्य का इतिहास, उपनिषद, वैदिक दर्शन, लौ कक/पारलौ कक लक्ष्य

प्रस्तावना

मनुष्य के वास्त वक स्वरूप, महत्व और अंतिम लक्ष्य के संबंध में जगत में सृष्टि के आदि से वर्तमान तक दो परस्पर वरोधी वचारधारा देखने को मलती है| यह दो वचारधाराएं निम्न है|

1. प्रथम वचारधारा के अनुसार यह संसार अस्थिर, अस्थाई, नश्वर है इस कारण यह संसार है असत्य और अस्थाई है| इस असत्य और अस्थाई वस्तुओं के पीछे भागना व् अपना समय नष्ट करना व्यर्थ है अतः इस संसार के माया मोह में फंसकर इन कल्पना मं डत शक्तियों को त्यागकर पारलौ कक ध्यान में यह परम सत्य की खोज में ही अपना संपूर्ण समय व्यतीत करना चाहिए|
2. दूसरी वचारधारा प्रथम वचारधारा की वपरीत है इस वचारधारा के अनुसार वह जीवन वास्तव में पूर्ण और सफल है जिसमें मनमाने भोग के लए भौतिक वस्तुओं की प्रचुरता हो| जीवन की सफलता भोग की मात्रा पर ही निर्भर है| इस वचारधारा के अनुसार परलोक मनुष्य के लए अज्ञात, अस्पष्ट अवास्त वक है, उसके वषय में सोचना व्यर्थ है वास्त वक सत्य वर्तमान जीवन है और अ धका धक सुख जीवन की सफलता व
3. सार्थकता है| इस प्रकार की वचारधारा आज की पश्चिमी सभ्यता में पाई जाती है और इसमें कुछ अंश तक वर्तमान भारतीय संस्कृति भी प्रभा वत हो रही है|

प्राचीन हिंदू वचारधारा या वस्तृत अर्थ में प्राचीन भारतीय संस्कृति में उपयुक्त दोनों वचारधाराओं का सम्मिश्रण,सामंजस्य और अपूर्व संबंध में देखने को मलता है| भारतीय संस्कृति का मानना है क शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लए मानव संसार में भौतिक जीवन में तथा संयम, नियम और आदर्श से परिपूर्ण आध्यात्मिक जीवन में कोई स्थाई वभाजन और वरोध नहीं है ले कन भोग सर्वस्य जीवन को ही पूर्ण अपना लेना उ चत नहीं है क्यों क यह सब सांसारिक ऐश्वर्य अस्थिर है यह धीरे-धीरे नष्ट हो जाएगा और इसके पश्चात इस जीवन को आध्यात्मिक उन्नति में लगाना आवश्यक है ता क परलोक में सुख मले अथवा आध्यात्मिक सुख की प्राप्ति हो|

प्राचीन कालीन भारतीय वचारकों ने उपयुक्त दोनों वचारधारा में संबंध में स्था पत कर मनुष्य के जीवन को आध्यात्मिक भौतिक और नैतिक दृष्टि से उन्नत करने के नि मत्त पुरुषार्थ के नाम से अपने दार्शनिक वचारों की नियोजना और व्याख्या की| इन वचारको ने मानव जीवन के सुख के दो आधार बताए हैं|

1. पहला भौतिक आधार
2. दूसरा आध्यात्मिक आधार

भौतिकसुख के अंतर्गत सांसारिक आकर्षण और एश्वर्य प्रधान वस्तु का प्रयोग आता है तथा आध्यात्मिक सुख के अंतर्गत त्याग और तपस्या तथा निय मत व संय मत जीवन जीना आता है| भौतिक सुख को अस्थाई और असत्य कहा गया है जब क आध्यात्मिक सुख स्थाई, सत्य स्थिर और परमानंद है| आध्यात्मिक सुख उन्नति प्राप्त कर मोक्ष मुक्ति की ओर अग्रसर होता है|

शारीरिक आवश्यकता की पूर्ति के लए मनुष्य कामपरक प्रवार्तियो पर निर्भर रहता है| कंतु उसके अतिरिक्त जीवन को संय मत निय मत और आदर्शपूर्ण बनाना उसका परम कर्तव्य है|हिन्दू वचारको ने चंतन कया क उनके जीवन मेंभोग और कामना बहुत बड़ी उपलब्धि नहीं है बल्कि संयम नियम आदर्श और आध्यात्मिकता की सर्वोच्च उपलब्धि है| स्वार्थ लप्सा कामना वासना का जीवन आदर्श और वास्त वक जीवन सत्य नहीं है न ही भोतिक सुख, और लौ कक समृ द्ध जीवन है|समस्त भौतिक सुख और समृ द्ध अस्थाई है| सांसारिक माया मोह भोग वलास मनुष्य को सन्मार्ग का दिदर्शन नहीं कराते हैं| ऐसी स्थिति में मनुष्य का संय मत और निय मत आचार तथा आध्यात्मिक वचार ही उसे सही निर्णय करने को प्रेरित करते है| अतः मनुष्य का जीवन लक्ष्य भौतिक सुख ना होकर आध्यात्मिक सुख होना

चाहिए तथा उसकी कार्यपद्धती वलास परखना होकर धर्म पर होनी चाहिए आध्यात्मिक और धर्म पर व्रतियों मनुष्यों को सात्विक और निस्वार्थ जीवन जीने के लए प्रेरित करती है और उसे ऐसे जीवन दर्शन का वास्त वक और अर्थ समझाती है| कंतु सांसारिक वस्तुओं सुखो संबंधों के नश्वर होते हुए भी उसकी अवहेलना नहीं की जा सकती है क्यों क यह शाश्वत नहीं है| इस लए इनका कोई अस्तित्व नहीं है ऐसा वचार करके मानव जीवन को समझना कार्य करना और जीवन के व भन्न लक्ष्यों को निर्धारित करना उ चत नहीं होगा| हमें यह स्मरण रखना चाहिए क प्राचीन भारतीय संस्कृति प्रवति मुलक थी ना क निरवर्ती मूलक| जिस आश्रम में हम मोक्ष प्राप्त करते हैं वह प्रारं भक काल में आश्रम ही नहीं माना जाता था प्रारं भक ग्रंथों में केवल तीन आश्रम के नाम ब्रह्मचारी आश्रम, गृहस्थ आश्रम और वानप्रस्थ आश्रम मलते हैं उदाहरण के छांदोग्य उपनिषद में केवल प्रारं भक 3 आश्रमों का उल्लेख है चौथे आश्रम का नहीं| इसका कारण श्वेता शवतर उपनिषद में बताया गया है क सन्यास सब आश्रम से अलग है| सन्यासी सभी सामाजिक बंधनों से मुक्त है इस लए उसे कसी आश्रम में रखना आवश्यक नहीं समझा जाता था समाज के लए उसका महत्व नहीं था| अतः सामाजिक बंधनों व् सांसारिकता की भारतीय संस्कृति में उपेक्षा नहीं की गई है बल्कि प्रारंभ में उसे अ धक महत्व दिया गया था| निवृत्ति मूलक वचारधारा तो अरण्यक और उपनिषदों की देन है| अतः भारतीय जीवन में सुख काम भोग को भी महत्ता दी गई है| क्यों क शाश्वत सत्ता सांसारिक पदार्थों के रूप में व्यक्त होती है और इस लए उस परम सत्य परम ब्रह्म तक पहुंचने का मार्ग संसार के माध्यम से ही संभव है यदि मोक्ष प्राप्ति के तीन मार्ग बताए गए हैं

1. पहला कर्म मार्ग
2. दूसरा ज्ञान मार्ग
3. तीसरा भक्ति मार्ग

ले कन इन मार्गो पर चलने के लए हमें संसार से संबंध तो बनाना ही पड़ेगा कभी पता के रूप में, कभी पति के रूप में, कभी पुत्र के रूप में|क्यों क मनुष्य एक पारिवारिक व सामाजिक प्राणी है वह संबंधों की अवहेलना नहीं कर सकता|

एंडरसन एंड पार्कर ने सोसायटी इट्स ऑर्गेनाइजेशन एंड ऑपरेशन में लखते हैं क मनुष्य प्राकृतिक रूप से परिवार का सदस्य होता है परिवार के दो रूप होते हैं पहला वह जिसमें हम जन्म लेते हैं पुत्र रूप में तथा दूसरा जिसमें हम बच्चों को जन्म देते हैं पता रूप में| अतः हम निश्चित रूप से इन दोनों में से एक के सदस्य अवश्य होंगे| ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जो इन दोनों में से कसी एक का भी सदस्य ना हो|" अतः मनुष्य प्राकृतिक व् मान सक रूप से संसार से जुड़ा हुआ है जिसकी वह चाहते हुए भी अवहेलना नहीं कर सकता उसे कसी न कसी रूप में इन भौतिक वस्तुओं नश्वर पदार्थों और सजीव मनुष्य से जुड़ना पड़ेगा| भारतीय मनी षयों ने इस वचार को स्मरण रखते हुए आध्यात्मिक वचारधारा के साथ-साथ भोतिक वचारधाराओं को भी महत्व दिया|

ले कन साथ ही भारतीय वचारको ने यह कहा क जीवन के कसी एक भाग में केवल एक ही वचारधारा अपनाई जानी चाहिए| मनुष्य अपने जीवन में कसी भाग में या तो पूर्ण प्रवृत्त ही हो सकता है या पूर्णतया निवृत। इन दोनों वचारधाराओं को एक साथ अपने जीवन में लागू नहीं कया जा सकता है| उदाहरण ब्रह्मचर्य आश्रम में वह केवल अध्ययन यजन आदि करके धर्म प्राप्ति कर सकता है काम की प्राप्ति नहीं वह उसके लए निषेध है क्यों क प्रवृत्ति और निवृत्ति वचारधाराएं परस्पर वरोधी है इनको एक साथ अपनाया जाना संभव नहीं है| जिस प्रकार बोधायन धर्मसूत्र में कहा गया है क "वेद कृ ष वनाशाय

कृ ष वेद वना शनी|" जिस प्रकार वद्या अध्ययन से कृ ष का नाश और कृ ष प्रेम से वेदाध्ययन का नाश होता है| क्यों क वेदाध्ययन धर्म पुरुषार्थ से संबं धत है और कृ ष अर्थ पुरुषार्थ से| वेदाध्ययन धर्म प्राप्ति के लए कया जाता है और कृ ष अर्थ प्राप्ति के लए जीवन के कसी एक भाग में मनुष्य एक प्रकार के सुख प्राप्त करता है या तो वह आध्यात्मिक सुख प्राप्त कर सकता है या भौतिक सुख|जीवन के व भन्न भागों में व्यक्ति व भन्न पुरुषार्थ को प्राप्त करता हुआ उन्नति करता है|

वास्तव में दोनों प्रकार के सुख वचारधाराओं में परस्पर अ वच्छिन्न रूप से संबं धत है और उन्हें प्रथक करना अनु चत और भ्रान्तिकारक होगा| इन दोनों को मलाकर ही मानव जीवन के वास्त वक स्वरूप महत्व और लक्ष्य का निरूपण व निर्धारण करना चाहिए| इसी महत्वपूर्ण समन्वय की अ भव्यक्ति पुरुषार्थ चतुष्टय का सद्धांत है| वस्तुत जीवन में भौतिक सुख और आत्मिक सुख दोनों का महत्व है तथा दोनों का समन्वित उद्देश्य जीवन को उन्नत करना है| जीवन की सार्थकता इसी में है क दोनों का समन्वित और संतु लत रूप ग्रहण कया जाए| अत भारतीय जीवन दर्शन इन दोनों प्रवृत्तियों का संतु लत , समन्वित स्वरूप है जिसे प्राचीन भारतीय मनी षयों द्वारा पुरुषार्थ चतुष्टय की अवधारणा के नाम से अ भहित कया गया है|

पुरुषार्थ चतुष्टय की अवधारणा के चार भाग हैं - यह है धर्म अर्थ काम और मोक्ष|

भौतिक सुख और अलौ कक आनंद अर्थ और काम पुरुषार्थ के अंतर्गत आते हैं तथा आध्यात्मिक सुख और पार अलौ कक आनंद धर्म और मोक्ष पुरुषार्थ के अंतर्गत आते हैं| जिसमें भौतिक और आध्यात्मिक दोनों तत्वों थे इसके अंतर्गत मनुष्य लो कक उपभोग के साथ-साथ धर्म का अनुसरण करते हुए ईश्वर की ओर उन्मुख होकर मोक्ष को प्राप्त करता है|

हिंदू दार्शनिकों के अनुसार जीवन और मृत्यु से छुटकारा पाना और परम ब्रह्म की प्राप्ति करना ईश्वर के समीप पहुंचना ही मोक्ष है| यही मनुष्य जीवन की उल्लेखनीय सार्थकता और चरम लक्ष्य है, स्पष्ट है क हिंदू वचारधारा लौ कक और पारलौ कक लक्ष्य दोनों को महत्व देती है तथा मनुष्य के जीवन को सामने रखकर आश्रम व्यवस्था के अंतर्गत मनुष्य को पुरुषार्थ करते निष्ठा का सार्थक दायित्व स्वीकार करती है|

अतः स्पष्ट है क पुरुषार्थ चतुष्टय के निर्धारण के पीछे भारतीय हिंदू दार्शनिक के क्या वचार रहे थे, पुरुषार्थ चतुष्टय का सद्धांत भारतीय संस्कृति की महत्वपूर्ण वशेषता है इस सद्धांत की संरचना प्राचीन भारतीय ऋ ष-मुनियों को चंतकों शास्त्र कारों व वधताओं मानव जीवन के व भन्न पक्षों भौतिक और आध्यात्मिक पक्षों को दृष्टि में रखकर की थी| इसे द्रष्टि से भारतीय दार्शनिकों की वैचारिकता महान है| पाश्चात्य दर्शन के इतिहास लेखक, प्रोफेसर आदि का मानना है कभारत में जीवन दर्शन जैसी कोई चीज नहीं है ले कन भारतीय प्रसाद चतुष्टय व अन्य वैदिक दर्शन इस बात के जवलंत प्रमाण है क भारतीय हिंदू दर्शन के बिना दर्शन का इतिहास हिस्ट्री ऑफ फलॉसफी लखा ही नहीं जा सकता है|

डॉ. बलदेव उपाध्याय ने लखा क पश्चिम का तत्वज्ञ उस ना वक के समान है जो बिना कसी गंतव्य स्थान का निर्धारित कए बिना अपनी नौका को वचार सागर में डाल देता है उसे इसकी चंता नहीं की नाव कस घाट लगेगी अगर भीर घाट पर अटकी रही है तो भी खुशी है यदि चीर घाट पर लग जाए तो भी आनंद है| ले कन भारतीय दार्शनिक दुखमय आध्यात्मिक आ ध भौतिक तथा आ धदै वक रात्रि द् वघात से उद गन में होकर इनकी आमूल उच्छेद करने की भावना से प्रेरित होता है और साध्य का निश्चय अपनी ववेचना शक्ति के आधार पर करके ही वह साधन

मार्ग की व्याख्या करता है उसे अपने मार्ग से भटकने का तनिक भी डर नहीं है|

अतः भारतीय दार्शनिक की दृष्टि पाश्चात्य दार्शनिकों की अपेक्षा कहीं अ धक व्यवहारिक तथा लोक हितकारी, सुव्यवस्थित तथा सर्वांगीण होती है| जहां एक और पश्चिमी जीवन दर्शन जीवन की एक ही पक्ष या तो भौतिक सुख या फर आध्यात्मिक सुख का वचार प्रस्तुत करता है वही भारतीय हिंदू दर्शन जीवन के दोनों पक्षों को ध्यान में रखकर पहले भौतिक सुख का उपभोग करने के उपरांत आध्यात्मिक उन्नति का मार्गदर्शन करता है यही पुरुषार्थ चतुष्टय की वशेषता है और भारतीय जीवन दर्शन की एक महान उपलब्धि है|

अतः संक्षेप में प्राचीन भारतीय दर्शकों द्वारा पुरुषार्थ चतुष्टय की अवधारणा को मनुष्य जीवन का आधार बनाने के निम्न प्रयोजन थे पहला मनुष्य के जीवन और उसके जीवन के व भन्न आश्रमों को संय मत निय मत व्यवस्थित बनाना तथा जीवन को उच्च आदर्शों से प्रेरित करना| दूसरा मनुष्य को धर्म अनुसार भौतिक सुखों इंद्र सुखों रति सुखों संतान उत्पत्ति की उपलब्धि कराना| तीसरा मनुष्य की भौतिक सुखों की उपलब्धि के पश्चात उसकी आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करना| चौथा मनुष्य के जीवन को उसके समस्त कर्मों को धर्मानुसार पालन करवाना तथा उसे पूर्ण से धर्म की सीमा में बांधना| पाचवा मनुष्य की आ र्थक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करके उसे जीवन के परम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति करना तथा उसे परम ब्रह्म से मलाना तथा उसे जीवन मृत्यु के बंधनों से मुक्त कराना| मनुष्य के भौतिक और आध्यात्मिक वचारों में सम्मिश्रण समन्वय और सामान्य से समय अनुसार बनाए रखना| इस अवधारणा के अनुसार मनुष्य के सामाजिक, धा र्मक, आ र्थक, सांसारिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक तथा आधी दै वक जीवन को संतुष्टि प्रदान कर उन्नत बनाना है तथा मुक्ति के मार्ग का दिव्य दर्शन कराना है|

पुरुषार्थ चतुष्टय धर्म अर्थ काम मोक्ष अपनी संतु लत अवस्था में आदर्श व्यक्तित्व या जीवन का प्रतीक है| श्रुति युग से पुरुषार्थ रूपी धारा आज तक अनंत रूप से प्रभाव मान है| इस आदर्श के अनुसार मानव जीवन केवल अ धकारों को ही नहीं बल्कि कर्तव्यों को भी सू चत करता है तथा त्यागमय कर्तव्यमय व अनुशा सत जीवन का प्रतिनि धत्व करता है| इन सब के महत्वपूर्ण समन्वय से जीवन की परम प्राप्ति सरल होती है| अनुशासन और कर्तव्य मानव जीवन का धर्म है उसका ही अर्थ और काम पक्ष तथा परम प्राप्ति को मोक्ष कहा गया है इस तरह मानव जीवन के सर्वांगीण व् संतु लत वकास के लए भारतीय मनी षयों ने जिस चंतना को अंगीकार कया उसे पुरुषार्थ चतुष्टय के नाम से जाना जाता है|

मनुष्य पुरुषार्थ के माध्यम से ही अपना धा र्मक, आ र्थक, आध्यात्मिक, सामाजिक उत्कर्ष करता है| वह अपने जीवन में 3 वर्ग धर्म, अर्थ, काम का सेवन करता हुआ मोक्ष पथ पर अग्रसर होता है| ले कन ये त्रि वर्ग धर्म की धुरी पर घूमता है| ये त्रि वर्ग 3 धर्म अनुसार, धर्म अनुकूल ही होना चाहिए तभी यह पुरुषार्थ का रूप धारण करते हैं| जीवन में इनका धर्म वरुद्ध अत्य धक सेवन व्यक्ति के जीवन को कष्टदायक बना देता है|हिंदू जीवन दर्शन में पुरुषार्थ वश्व का अकेला और अनुपम जीवन दर्शन है जिसमें जीवन के प्रति मोह है तो योग भी है, बधन है तो मुक्ति भी है , कामना है तो साधना भी है , आसक्ति है तो त्याग भी है| पश्चिम के जीवन दर्शन में केवल भौतिकता का ही प्रभाव है ले कन आध्यात्मिकता का अंश कम| ले कन हिंदू जीवन दर्शन में अर्थ और काम भौतिकता से संबं धत उद्देश्य भी है तो धर्म है मोक्ष जैसे आदर्श उच्च भी है| इस लए पुरुषार्थ मनुष्य के नि मत्त अत्यंत उपयोगी व लाभप्रद सद्धांत माना गया है जो व्यवहारिक भी है| एक पुरुषार्थ का सेवन करते हुए ध्यान देना अनिवार्य है क उस अवसर पर अथवा सद्ध कया

जाता हो दुसरे पुरुषार्थ की प्राप्ति में बाधक तो नहीं है यह परस्पर वरोधी नहीं होनी चाहिए| आचार्य मनु ने भी अलग-अलग इनको न मानकर त्रि वर्ग को ही कल्याणकारी माना| पुरुषार्थ चतुष्टय का यह सद्धांत इस लए महत्वपूर्ण है क्यों क इसने प्रवृत्ति और निवृत्ति में एक्य स्था पत कया| पुरुषार्थ केवल प्रवृत्ति और निवृत्ति का वरोधी नहीं है प्रवृत्ति का अर्थ अपनी उन्नति करते हुए समाज और राष्ट्र के प्रति अपने उतरदायीतव का निर्माण करना न की संसारिकता और भोग वलास में फसना| प्रवृत्ति निवृत्ति का अ भप्राय कल्याणकारी कार्यों को करना और अहितकारी कार्यों से बचना| पुरुषार्थ इसी उद्देश्य का नाम है|

पुरुषार्थ का सेवन नियम पूर्वक व संयम से करना चाहिए इससे उसकी महत्ता है कर्तव्यों का सुगमतापूर्वक संपादन पुरुषार्थ के माध्यम से ही संभव है तथा उस परमात्मा के प्रति भक्ति परीक्षण करना भी इसी के माध्यम से कया जाता रहा है| धर्म के बिना व्यक्ति का कोई कर्म अनुशा सत नहीं हो सकता धर्म-कर्म को संवैधानिक रूप प्रदान करके पालनीय बनाता है| धर्म को कर्तव्यो का प्रकाशपुंज माना गया है जिससे सत्य प्रकाश फैलता है| व्यक्ति के समस्त कार्य धर्म के आधार पर ही संपन्न करने की व्यवस्था भारतीय धर्म शास्त्रकारोने की है| धर्म से ही व्यक्ति सभी प्रकार के सुखों को प्राप्त कर सकता है अतः धर्म ही सभी सुखों का मूल है|

पुरुषार्थ चतुष्टय सद्धांत के पीछे भारतीय चंतकों की मूल धारणा यह थी क व्यक्ति के जीवन को व्यवस्थित संतु लत और सुखी कैसे बनाया जाए इसके लए उन्होंने पुरुषार्थ चतुष्टय सद्धांत की योजना की जो अपने उद्देश्य में पूर्णता सफल रहा| पुरुषार्थ के माध्यम से ही व्यक्ति पूर्ण से अपनी भारतीयता की छ व व संस्कृति तथा भारतीय संस्कृति को बनाए रखने में सफल रहा क्यों क पुरुषार्थ के माध्यम से ही व्यक्ति नैतिक जीवन जीता था उसके सभी कार्य भारतीय धर्म के अनुसार ही होते थे , इस लए वह अपने धर्म और संस्कृति की रक्षा करने में सफल रहा क्यों क धर्म व्यक्ति के अर्थ और काम को नियंत्रित करता है अतः वह भ्रष्ट होने से बच गया| आधुनिक युग में भारतीय जीवन दर्शन का हास्य होता जा रहा है ऐसे में पुरुषार्थ चतुष्टय का सद्धांत की आवश्यकता अनुभव की जाती रही है यदि पुरुषार्थ चतुष्टय का सद्धांत आधुनिक युग में भी अनेक बाधाओं के बावजूद कसी न कसी रूप में प्रभावमान है| इतिहास निरंतर प्रगतिशील व परिवर्तनशील है उसी में पुरुषार्थ सद्धांत को भी थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ आधुनिक जीवन के परिवेश में अपनाया जा सकता है इससे न केवल हमारे जीवन दर्शन जी वत रह सकेगा साथ ही रूढ़िवादी होने का जो मथ्या आरोप पश्चिम वचारको ने हम पर लगाया है उसका भी वरोध कया जा सकेगा| पुरुषार्थ चतुष्टय जीवन दर्शन प्राचीन काल से वर्तमान तक मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण का प्रधान आधार ही नहीं बल्कि एक प्रेरणा स्त्रोत्र रहा है तथा इसकी प्रासं गकता वर्तमान युग में भी बनी हुई है|

संदर्भ ग्रंथ

1. ऋग्वेद संहिता- भाष्य सायानाचार्य वैदिक संशोधन मंडल पुणे 1933
2. ऋग्वेद संहिता- भाष्य मह र्ष दयानंद, अजमेर नगर वैदिक मंत्रालय 1961
3. अथर्ववेद संहिता- भाष्य मह र्ष दयानंद सार्वजनिक सभा नई दिल्ली 1975
4. अर्थशास्त्र- आचार्य कौटिल्य
5. वष्णु धर्मसूत्र टीकाकरण नन्द पं डत
6. उपनिषद संग्रह मोतीलाल बनारसीदास ,दिल्ली 1980
7. ईशादी नौ उपनिषद - व्याख्या कार हरे कृष्ण दास गोयन्दका, गीता प्रेस गोरखपुर
8. महाभारत- गीता प्रेस गोरखपुर

9. मनुस्मृति- भाष्य हर गो वंद शास्त्री चौखंबा संस्करन वाराणसी
10. धर्म शास्त्र का इतिहास- भारत रत्न महामहोपाध्याय डॉक्टर पांडुरंग वामन काणे
11. पुरुषार्थ- भारत रत्न भगवानदास चौखंबा भवन वाराणसी
12. प्राचीन धर्म और पाश्चात्य वचार- डॉ राधाकृष्णन
13. सत्यार्थ प्रकाश- मह ष दयानंद सरस्वती
14. प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास- डॉ जयशंकर मश्र
15. प्राचीन भारत का सामाजिक व आ र्थक इतिहास- डॉ ओम प्रकाश
16. संस्कृति के चार अध्याय- डॉ रामधारी संह दिनकर
17. भारतीय संस्कृति- डॉ करण टंडन
18. संस्कृत साहित्य का इतिहास- डॉ बलदेव उपाध्याय